योग-वासिष्ठ का ज्ञान – (1)

उन परमात्मा को नमस्कार है !

यतः सर्वाणि भूतानिप्रतिभान्ति स्थितानि च ।
यत्रैवोपशमं यान्ति तस्मैसत्यात्मने नमः ॥१.१.१॥

-- योग-वासिष्ठ, वैराग्य-प्रकरण, सर्ग-1, श्लोक-1

सृष्टि के आरम्भ में सम्पूर्ण भूत (प्राणी) जिनसे प्रकट होकर प्रतीति के विषय होते हैं (अर्थात आँखों से दिखलाई देते हैं), स्थिति-काल में जिनमें स्थित होते हैं और प्रलय-काल आने पर जिनमें लीन हो जाते हैं, उन सत्य-स्वरूप परमात्मा को नमस्कार है।

ज्ञाता ज्ञानं तथा ज्ञेयं द्रष्टादर्शनदृश्यभूः ।
कर्ता हेतुः क्रिया यस्मात्तस्मै ज्ञस्यात्मने नमः ॥१.१.२॥

-- योग-वासिष्ठ, वैराग्य-प्रकरण, सर्ग-1, श्लोक-2

ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय; द्रष्टा, दर्शन और दृश्य; तथा कर्ता, कारण और क्रिया -- इन सब की जिनसे उत्पत्ति होती है, उन ज्ञान-स्वरूप परमात्मा को नमस्कार है।

स्फुरन्ति सीकरा यस्मादानन्दस्याम्बरेऽवनौ ।
सर्वेषां जीवनं तस्मै ब्रह्मानन्दात्मने नमः ॥१.१.३॥

-- योग-वासिष्ठ, वैराग्य-प्रकरण, सर्ग-1, श्लोक-3

जिनसे स्वर्ग, पृथ्वी-मंडल और सभी लोकों में आनंद-रूपी जल के कण स्फुरित (उत्तेजित) होते हैं व प्राणियों के अनुभव में आते हैं, तथा जो समस्त जीवों के जीवन-आधार हैं, उन पूर्ण एवं विशुद्ध-ज्ञान और आनन्द के सागर परब्रह्म परमात्मा को नमस्कार है।

दिवि भूमौ तथाऽऽकाशे बहिरन्तश्च मे विभुः ।
यो विभात्यवभासात्मा तस्मै सर्वात्मने नमः ॥१.२.१॥

-- योग-वासिष्ठ, वैराग्य-प्रकरण, सर्ग-2, श्लोक-1

जो प्रकाश (ज्ञान) स्वरूप सर्वव्यापी परत्मात्मा स्वर्ग में, पृथ्वी-मण्डल में और आकाश में तथा हमारे अंदर और बाहर -- सर्वत्र प्रकाशित हो रहे हैं, उन सर्वात्मा को नमस्कार है!